जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 207
दिनांक 23.12.2022

देश के कृषक हमारे धरती पुत्र– कुलपति डॉ. पी.के. मिश्रा
कृषि विज्ञान केन्द्र में किसान दिवस पर प्राकृतिक कृषि एवं उत्तम कृषि पद्धति विषय पर किसान सम्मेलन का आयोजन

जबलपुर 23 दिसम्बर 2022। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर में राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर उपसंचालक कृषि एवं परियोजना संचालक आत्मा, जबलपुर के सहयोग से **''प्राकृतिक कृषि एवं उत्तम कृषि पद्धति किसान सम्मेलन''** का आयोजन कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा के मुख्यआतिथ्य में आयोजित हुआ। किसान सम्मेलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुये मुख्यअतिथि कुलपति डॉ. पी. के. मिश्रा ने कहा कि, किसानों के योगदान के लिये कार्य करने वाले भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की याद में किसान दिवस प्रति वर्ष 23 दिसम्बर को मनाया जाता है। चौधरी चरण सिंह को भारतीय किसानों की स्थिति में सुधार लाने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने सम्मेलन में उपस्थित किसानों से कहा कि मिट्टी के स्वास्थ्य को बचाना है, और उर्वरक शक्ति बढ़ाना है, जितनी आवश्यकता है, उतनी ही खाद का सही व उचित प्रयोग करे, जिससे मिट्टी में पोषक तत्व बना रहे। तभी प्राकृतिक खेती, जैविक खेती की संकल्पना साकार हो सकेगी। कुलपति पीके मिश्रा ने देश के कृषको को धरती पुत्र निरूपित करते हुये कहा कि कृषको को पहले की भांति जल, जंगल, जमीन को बचाने के लिये प्रयास करने होंगे।

किसान सम्मेलन में स्वागत उद्बोधन डॉ. रश्मि शुक्ला, कृषि विज्ञान केन्द्र,जबलपुर की वरिष्ट वैज्ञानिक एवं प्रमुख ने दिया एवं किसान दिवस की उपयोगिता और किसान सम्मेलन कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि संचालक अनुसंधान सेवायें, डॉ. जी. के. कौतू ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में बहुत सारे बदलाव 50 से 70 वर्षो में देखे हैं, लेकिन अभी दो–तीन वर्षो में ज्यादा ही बदलाव हुये हैं। आज हमारा देश अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी खादान्न सामग्री उपलब्ध कराने में सक्षम हैं, और यह सभी संभव हमारे कृषक भाईयों की मेहनत और परिश्रम का फल है। लेकिन प्राकृतिक खेती की ओर भी किसानों को ध्यान देने की आवश्यकता है, पुरानी पद्धतियां हमसे दूर होती जा रही है। हमे प्राकृतिक खेती, जैविक खेती को कृषि के क्षेत्र में समावेश करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के संचालक विस्तार सेवायें डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि जैसे–जैसे प्राकृतिक खेती से हम दूर होते जा रहे हैं, वैसे–वैसे बीमारियां करीब आने लगी हैं। पहले किसान भाई बाजारों की चीजे कम इस्तेमाल करते थे, खेती में गोबर, गौमूत्र का उपयोग होता था। लेकिन अब इन सभी से दूरियां होने के कारण आज हमारी मिट्टी बीमारू हालत में हो गई है। उन्होंने कृषकों को प्राकृतिक खेती, जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिये किसानों को आगे आकर कार्य करने पर जोर दिया है। संचालक शिक्षण डॉ. अभिषेक शुक्ला एवं अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, जबलपुर डॉ. पी. बी. शर्मा ने भी प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने पर जोर देते हुये कहा कि, कृषि वैज्ञानिक लगातार किसानों के साथ सहभागिता निभा रहे हैं। जिससे प्राकृतिक खेती की ओर किसानों का रूझान बढ़े, साथ ही उन्होंने किसानों से नरवाई जलाने के दुष्परिणामों के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये हैं।

किसान सम्मेलन में कृषि विज्ञान केन्द्र, पशु पालन एवं डेरी विभाग, कोरोमंडल, जैविक उत्पाद एवं कृषि साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई गई। जिसका अतिथियों द्वारा अवलोकन भी किया गया। साथ ही कार्यक्रम में कुछ ऐसे 8 किसान भी उपस्थित रहे, जिन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से उत्कृष्ट कार्य किया है। जिन्हें कुलपति डॉ. मिश्रा एवं मंच पर उपस्थित अतिथियों द्वारा प्रमाण पत्र, साल एवं श्रीफल देकर स्वागत सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. डी. के. सिंह एवं आभार प्रदर्शन डॉ. ए. के. सिंह ने किया। कार्यक्रम में डॉ. रश्मि शुक्ला, वरिष्ट वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. आर. एस. शुक्ला, विभागाध्यक्ष, पादप प्रजनक एवं अनुवांशिकी विभाग, खाद्य एवं प्रौद्योगिकी विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. एस.एस शुक्ला, पौधरोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. जयंत भट्ट, डॉ. एस. बी. अग्रवाल, डॉ. संजय वैशम्यापन, सूचना एवं जनसम्पक अधिकारी, डॉ. शेखर सिंह बघेल, श्रीमति नमिता उरकुड़े, उपसंचालक कृषि एवं परियोजना संचालक आत्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, डॉ. ए. के. सिंह, डॉ. डी. के. सिंह, डॉ. यतिराज खरे, डॉ. नीलू विश्वकर्मा, डॉ. अक्षता तोमर, डॉ. निहारिका शुक्ला, डॉ. पूजा चतुर्वेदी, डॉ. नेहा शर्मा, डॉ. अभिषेक मिश्रा सहित बड़ी संख्या में पनागर, कुंडम सहित अन्य तहसीलों के महिला एवं पुरूष कृषक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।